RNI No - RAJHIN/2003/9899 :: Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 January 2018 :: Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd January 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : नौंवा | जनवरी–2018

5
नये साल का संदेश
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

9
जिंदगी एक भवसागर
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

21
गुरु का बच्चा
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

27
भजन–अभ्यास

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
9950556671, 8079084601, 9871501999

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
9667233304, 9928925304

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/-

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 190 Website : www.ajaibbani.org

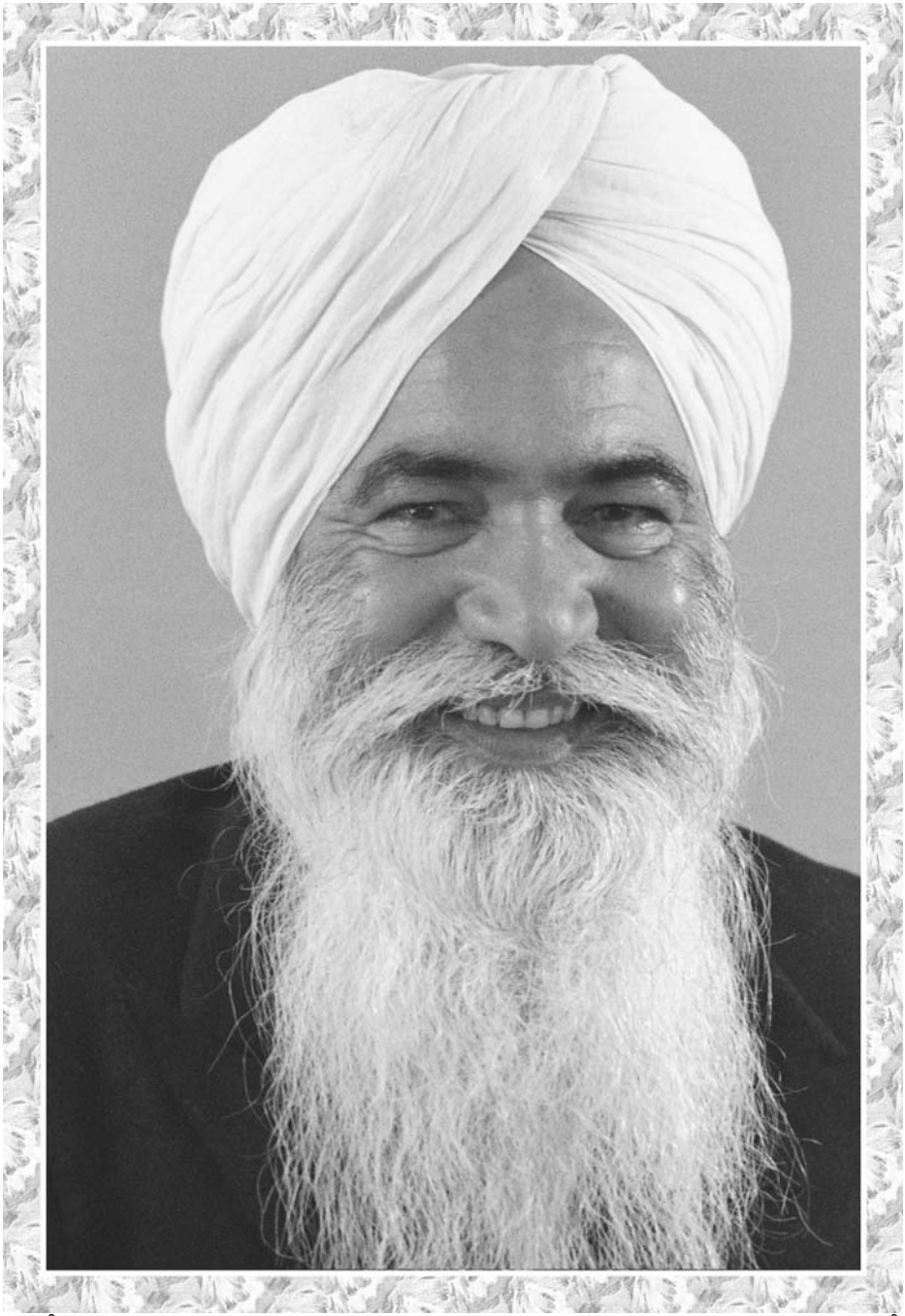

नये साल का संदेश

गुरु प्यारी साध संगत,

आप सबको नये साल की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं। हम भाग्यशाली हैं कि परमपिता परमात्मा, सतगुरु अजायब के रूप में इस संसार में आए उन्होंने हमें भक्ति का दान दिया और भजन-सिमरन का उपदेश दिया।

आओ! हम सब इस नये साल के शुभ अवसर पर अपने परमपिता परमात्मा अजायब सिंह जी महाराज के चरणों में प्रार्थना करें कि आप हमें अपने चरणों में लगाए रखें। आपकी प्यारी याद सदा हमारे हृदय में बसती रहे।

परमपिता अजायब सिंह जी महाराज ने भी 12 जनवरी 1996 को अपने गुरु महाराज कृपाल के चरणों में इस तरह प्रार्थना की, ''करण-कारण परमात्मा कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने अपार दया करके अपनी भक्ति का दान दिया। हम सबको यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे परमात्मा कृपाल! आप हमें सद्‌बुद्धि दें ताकि हम आपके प्यार और दया को समझ सकें।''

हे परमात्मा कृपाल! मेरा किसी भी रीति-रिवाज, धर्म-कर्म में विश्वास नहीं रहा। आप मुझे वह नाम दें जो पापियों को पुन्नी बनाता है, पापियों का उद्धार करता है और नीच से ऊँच करता है।

हे परमात्मा कृपाल! आप पापियों को तारने वाले हैं। हम बहुत से गुनाह करके आपके द्वार पर आए हैं आप हमें बख्श दें। हे परमात्मा कृपाल! आप बख्शनहार हैं अगर हमने पाप न किए होते तो आप किसे बख्शते, कौन आपको बख्शनहार कहता?

हे परमात्मा कृपाल! मैं दुनिया के धन-दौलत का क्या मान करूँ? बहुत सी सखियां आपके द्वार पर खड़ी हैं जो एक से बढ़कर एक हैं, वहाँ मेरा नाम किस गिनती में है? मैं जब अपने गुनाहों की तरफ देखता हूँ तो मेरी गर्दन शर्म से झुक जाती है लेकिन जब मैं आपकी तरफ देखता हूँ तब सिर गर्व से ऊँचा हो जाता है कि हमें इंसानी जामें में दया करने वाला दाता कृपाल के रूप में मिला है।

प्यारेयो! महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम गलती करके गलती न मानें तो हम एक गलती और कर रहे होते हैं।'' सबसे पहली बात यह है कि अगर हम बारीकी से इस जन्म के गुनाहों के बारे में सोचें! तो हम कोई हिसाब नहीं लगा सकते। हमारा मन अंदर बैठा हुआ श्वांस-श्वांस के साथ बहुत कुछ करता रहता है। यह कभी किसी को दोस्त बनाता है कभी किसी को दुश्मन बनाता है जबकि हमें पिछले जन्मों का तो ज्ञान ही नहीं है।

हमें पता नहीं कि हम कितने पापों की गठरी सिर पर उठाकर फिर रहे हैं? हमें करण-कारण परमात्मा के आगे अरदास करनी चाहिए क्योंकि वह दया करने के लिए ही संसार में आता है। हमें उसके आगे अरदास करनी चाहिए कि हम इधर-उधर भटक कर तेरे द्वार पर आए हैं तू हमें भक्ति का दान दें।

हे परमात्मा कृपाल! आप मेरी गाय माता हैं, मैं आपका बछड़ा हूँ। अब मैं आपके द्वार पर आया हूँ, मैं भूखा-प्यासा हूँ। आप मुझे माता की तरह दया का दूध पिलाएं।

हे परमात्मा कृपाल! मैं बेसहारा हूँ आप मुझे इस तरह सहारा दें जिस तरह पश्चिम के लोग अपनी पत्नी की पीठ पर हाथ रखते हैं इसी तरह आप मेरी पीठ पर अपना हाथ रखें।

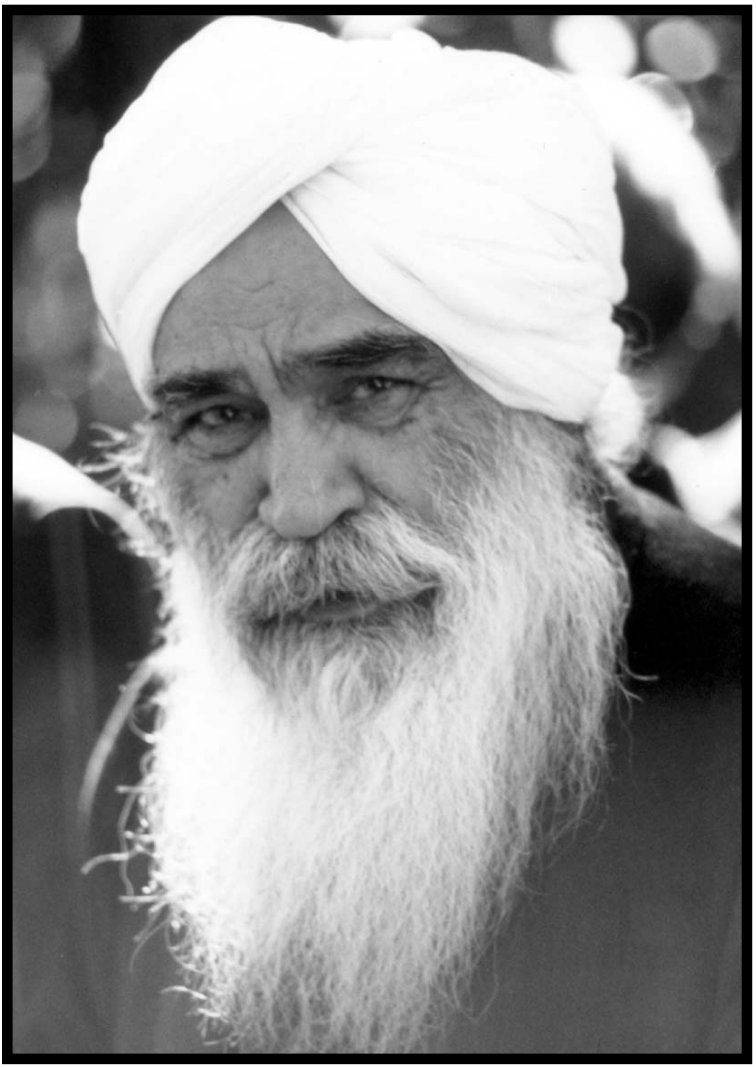

हम अज्ञानी जीव हैं हम आपके आगे प्रार्थना करने में असमर्थ हैं। हे सतगुरु! आपने जो प्रार्थना अपने सतगुरु कृपाल के आगे की हम अज्ञानी जीव इस नये साल के शुभ अवसर पर वही प्रार्थना आपके चरणों में समर्पित करते हैं। आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार करें कि हम नये साल में ज्यादा से ज्यादा भक्ति कर सकें। ***

सतगुरु प्यारे मेरी, ज़िंदगी सवार दे,
कर्मां दे मारे तेरे, दर ते पुकार दे, (2)

1. तेरे ते गुरुजी मेरा, राई रत्ती जोर ना,
तेरे बाजों दुनियां ते, मेरा कोई होर ना, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

2. शरण मैं तेरी आया, मैनूं ठुकराईं ना,
दु:ख में बथेरे पाऐ, होर तड़फाईं ना, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

3. दुखां नाल तपया तूं, दिल मेरा ठार दे,
कर्मां दे मारे तेरे, दर ते पुकार दे, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

जिंदगी एक भवसागर

स्वामी जी महाराज की बानी DVD-516 सनबार्टन– अमेरिका

लिख सतगुरु वल पाईयां चिट्ठियां दर्दा दियां।

परमात्मा सन्त–सतगुरु बनकर जीवों के लिए संसार में आता है और आत्मा को सुरत–शब्द का भेद बताता है। जब भूला बेटा बुरी हरकतें करके चोरियां–डाके मारकर पुलिस के हवाले होकर जेल चला जाता है तो उसका पिता कोर्ट में जाकर अपने बेटे के लिए अपील करता है बेशक पिता अपने बच्चे की बुरी हरकतों से खुश नहीं फिर भी ममता से बंधा हुआ अपने दुनियावी पुत्र के लिए बहुत कुछ करता है।

हमारी आत्मा सतपुरुष की पुत्री है। जब आत्मा बुरे कर्म करके इस काल की, दुखों की नगरी में फँस जाती है तो सतपुरुष से भी रहा नहीं जाता वह आत्मा को लेने के लिए आता है। जब से आत्मा परमात्मा से बिछुड़ी है इसने अपने सिर के ऊपर दुखों के भार उठा लिए हैं यह उन दुखों के नीचे दबी हुई है। सतगुरु की मदद के बगैर यह आत्मा कभी भी इस गंदे परेशान संसार से निकल नहीं सकती, आजाद नहीं हो सकती।

आपके आगे स्वामी जी महाराज के बारह मासा में से एक शब्द रखा जा रहा है। इस शब्द को गौर से सुनें, यह शब्द विचारने योग्य है:

क्वार महीना चौथा आया। जिव भौ सागर वार रहाया।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जीव अपने घर परमात्मा से बिछुड़कर चौरासी लाख योनियों के जेलखाने में फँस गया, दुखों की नगरी में आ गया। चाहे यह जप–तप, पूजा–पाठ करे लेकिन सन्तों की मदद के बगैर जीव इस दुखों की नगरी से नहीं निकल सकता, काल के दायरे से आगे नहीं जा सकता; यह बंधनों दुखों मुसीबतों में ही फँसा रहता है।''

पार न जावे वार रहावे। साध संत संग प्रीत न लावे।।

आप कहते हैं, ''यह आत्मा न जप से न तप से और न ही किसी हुकूमत के जोर से पार जा सकती है। साधु सन्तों की ताकत ने इसे पार करना है उनके साथ इसका प्यार नहीं। यह आत्मा साधु–सन्तों की सोहबत–संगत में नहीं जाती।'' महात्मा ब्रह्मानंद कहते हैं:

मंदिर जाए करे नित पूजा राखे बड़ा अचार रे।
साधु जन की कद्र न जाने मिले न सिरजन हार रे।।

जगत भोग में रहे अधीना। रोग सोग दुख सुक्ख मलीना।।

अब आप कहते हैं, ''जो पानी नाली के कई सुराखों में से बहता है अगर सारे सुराख बंद कर दिए जाएं, एक सुराख रह जाए तो पानी की धार बहुत जबरदस्त बहती है। इसी तरह यह जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की लहरों में बह रहा है। इसे वहाँ से फुर्सत मिले तो यह उन जहरों से छुटकारा पाकर सतसंग में आए, नाम से साधु–सन्तों से प्यार करे।''

ज्ञान वैराग भक्ति नहिं धारी। मोह राग हंकार पचा री।।

आप कहते हैं, ''इसने परमात्मा को प्राप्त करने का ज्ञान प्राप्त नहीं किया और न ही इसके अंदर वैराग्य पैदा हुआ। यह मोह और क्रोध की लहर में फँस गया। जिस मकसद के लिए परमात्मा ने इसे जन्म दिया था उस तरफ लगा ही नहीं।''

क्वारी सुरत करे व्यभिचारा। मन इन्द्र संग फिरती लारा।।

आप कहते हैं, ''अगर कोई कुँवारी लड़की बिना बाप के बच्चा पैदा करती है तो वह खुद भी परेशान होती है, समाज वाले और रिश्तेदार भी उसे अच्छा नहीं समझते।''

हिन्दुस्तान में अगर कोई कुँवारी लड़की ऐसा कर्म कर ले तो घर वाले, समाज वाले उसे घर में भी नहीं रखते। जब तक आत्मा को कोई गुरु नहीं मिलता वह नाम नहीं देता तब तक यह आत्मा कुँवारी है। कुँवारी आत्मा मन इन्द्रियों का साथ लेकर व्याभिचार करती है। मन, इन्द्रियों के बस में है। जो इन्द्री इसे जिस तरफ खींचती है यह उसी तरफ खिंचा चला जाता है। आँखों की इन्द्री सुंदर–सुंदर रूप पर खींचकर ले जाती है। कानों की इन्द्री राग–रंग पर ले जाती है। जुबान की इन्द्री अच्छे–अच्छे खानों पर ले जाती है।

जिस तरह यहाँ बाहर शादी होती है उसी तरह जब सन्त–सतगुरु आत्मा को नाम देते हैं तब शब्द और आत्मा की शादी हो जाती है। आत्मा उस शब्द की औरत बन जाती है और शब्द इसका पति बन जाता है। फिर पति जब चाहे इसे लेकर जा सकता है। अगर आत्मा इसे छोड़ना भी चाहे तो छोड़ नहीं सकती, वह अपना किया हुआ वायदा अवश्य पूरा करता है। जो अंदर जाते हैं वे इस राज को समझते हैं।

नामदान देते समय सन्त–सतगुरु ऐसे ही पास नहीं बैठे रहते वे कुछ और भी करते हैं। अच्छा पति अपनी ड्यूटी पूरी करता है अगर कोई उसकी औरत की तरफ अंगुली भी करे तो वह उसकी बाँह काटने तक जाता है। इसी तरह सतगुरु अपनी औरत आत्मा के नजदीक यम तक को नहीं आने देते, भटकी हुई आत्माएं तो इनका क्या कर सकती हैं ?

काम क्रोध में भरमत डोले। जड़ चेतन की गाँठ न खोले।

आत्मा कभी काम की, कभी क्रोध की, कभी लोभ की, कभी मोह की और कभी अहंकार की लहर में बह जाती है। आत्मा के ऊपर पच्चीस प्रकृतियां और पाँच तत्व हैं। आत्मा चेतन है मन जड़ है, ये उनकी गाँठ नहीं खोलती इन्हीं के बीच फँसी हुई है।

सतसंग करे न सतगुरु सेवे। भाव भक्ति में मन नहिं देवे।।

आप कहते हैं, ''इसे न सतगुरु के साथ प्यार है न सतसंग के साथ प्यार है और न गुरु का डर है।'' बहुत से प्रेमी जिन्हें आज से बीस पच्चीस साल पहले नाम मिला है वे इंटरव्यू में आकर कहते हैं कि हमने भजन–सिमरन कभी नहीं किया और न ही हम सतसंग में जाते हैं, हमने कोई तरक्की नहीं की।

अब आप खुद सोचकर देखें! मैं उन्हें क्या जवाब दूं? मैं उन्हें यही कहता हूँ, ''भाईयो! सब्र करो फिर से शुरू करो।''

काल चक्र का पड़ा हिंडोला। ऊँच नीच खावे झकझोला।।

आपने कई बार मेलों में हिंडोले चलते हुए देखे होंगे। हिन्दुस्तान में तो हिंडोलो का आम ही रिवाज है। नीचे वाले तमाशबीन ऊपर जाते हैं और ऊपर वाले तमाशबीन नीचे आते हैं। यह काल चक्र का एक हिंडोला चल रहा है अगर जीव ऊंची योनियों में बुरे कर्म करता है तो उसे निचली योनियों में जाना पड़ता है अगर निचली योनि में कोई अच्छा शुभ कर्म हो गया तो ऊपर के जामें में जाता है। जीव हिंडोले की तरह ऊँची–नीची योनियों में आता–जाता रहता है।

जो लोग चौरासी लाख योनियों को नहीं मानते वे इस तरह हैं जैसे कोई परमात्मा की मौज को न माने कि परमात्मा नहीं, मौत नहीं। जैसे कोई कत्ल करते हुए यह कहे कि पुलिस नहीं है लेकिन थोड़े ही समय बाद वह अपने आपको जेल में बंद देखता है। जो आदमी यह कहता है कि मौत नहीं लेकिन कुछ समय बाद वह मौत के मुँह में होता है। सन्त और ऋषि–मुनि चौरासी लाख योनियों और पुनर्जन्म को सच मानते हैं।

शम्स तबरेज ने कहा है, ''मैं कई बार पेड़ पर फल बनकर लगा और लोगों के पेट में गया। मैं संसार में बार–बार घास की तरह उगा।''

वेद व्यास योगेश्वर पदवी को प्राप्त थे। उनके लड़के सुखदेव मुनि को माता के गर्भ के अंदर ही ज्ञान था। सुखदेव मुनि ने बताया कि मुझे अपने सौ जन्मों का ज्ञान है। एक जन्म को तो मैं भूल ही नहीं सकता। उस जन्म में मैं गधा था। धोबी मेरे ऊपर गीले कपड़े लादकर खुद मेरे ऊपर बैठ जाता था। रास्ते में एक नदी पड़ती थी। धोबी मुझे खाने के लिए कुछ नहीं देता था, एक दिन भूख की वजह से मैं उस नदी में गिर गया। धोबी ने मुझे खूब मारा, मेरी टाँग टूट गई। मैं किस अदालत में जाकर कहता कि कोई मेरी दवाई बूटी करे।

आखिर धोबी मुझे वहीं छोड़कर अपने कपड़े उठाकर चला गया। नदी पार करने वालों ने मुझसे पुली का काम लिया मेरे ऊपर पैर रखकर नदी पार करते रहे किसी को मेरे ऊपर दर्द नहीं आया। कई दिन कौवो ने भी ठूंगे मारे मेरे शरीर में कीड़े पड़ गए। मैंने वह जन्म बहुत दुखी होकर व्यतीत किया। जब मुझे उस जन्म की याद आती है तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

एक जन्म में, मैं पिस्सु की योनि में आया। मैं किसी औरत के शरीर पर बैठ गया। वह औरत दोपहर में बाहर किसी काम के लिए जा रही थी। मैंने अपने चंचल स्वभाव की तरह उसे काटा उस औरत ने सोचा कि यह कोई जानवर है। जब उसने मुझे मसला तो मैं उसके हाथ में आ गया उसने मुझे अधमरा करके गर्म रेत पर फैंक दिया, मैंने गर्म रेत पर तड़प–तड़पकर अपनी जान दे दी। जब मुझे वह वक्त याद आता है तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

ऐसे घर हम बहुत बसाए, जब हम राम गर्भ होए आए।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज सुखमनी साहब में बताते हैं:

कई जन्म भए कीट पतंगा, कई जन्म गज मीन कुरंगा।

हमने अनेकों जन्म कीड़े–पतंगो के पाए, अनेकों जन्म जानवरों के पाए। वैसे भी एक–दूसरे के साथ ख्याल नहीं मिलते, स्वभाव नहीं मिलता। यहाँ सभी इंसान एक जैसे नजर नहीं आते कि सारे सुखी हैं। किसी को कोई बीमारी लगी है और किसी को कोई बीमारी लगी है। इससे सबूत मिलता है कि इस रचना के पीछे कोई ऐसी गुप्त ताकत है जो सारा लेखा–जोखा अपने पास ही रखती है। जो जैसा कर्म करता है वह गुप्त ताकत उससे वैसा ही भुगतान करवा रही है।

आज जो अपने कर्मों की वजह से कुत्ते, बिल्ले, साँप, चिड़िया, कौवे या और भी जानवर बने फिरते हैं अगर इनके लिए उन्नति का कोई मौका न हो तो परमात्मा इनके लिए बहुत बेइंसाफ है। हो सकता है ये पिछले जन्मों में अच्छे धनी आदमी, सेठ–साहूकार हों या अच्छी हुकूमतें करते हों लेकिन अपने कर्मों की वजह से आज ये ऐसी योनियों में फिर रहे हैं। अगर हम भी इंसानी जामें से नीचे जाने वाले कर्म करेंगे तो कुदरत हमें बिना लिहाज सजा देगी।

सन्त–महात्मा हमें बड़ा जोर देकर प्यार से समझाते हैं कि आप ऐसा कोई कर्म न करें जिसके कारण आपको फिर संसार में आना पड़े। सन्त–सतगुरु की पूरी कोशिश होती है कि हम अपने बच्चे को दोबारा इस संसार में न आने दें लेकिन हम अजीब ही अक्ल के मालिक हैं।

बच्चों की किताब में एक कहानी आती है कि एक आदमी घोड़े के ऊपर बैठकर जा रहा था, उसने एक तरफ चार मण गेहूँ और दूसरी तरफ चार मण रेत डाल रखा था। किसी आदमी ने पूछा कि घोड़े के ऊपर क्या लादा हुआ है? घुड़सवार ने कहा, ''एक तरफ चार मण गेहूँ और दूसरी तरफ चार मण रेत है ताकि भार बराबर रहे।'' उस आदमी ने कहा, ''भले मानस! अगर तू दोनों तरफ दो मण गेहूँ रख देता तो घोड़े के ऊपर कम बोझ आता।'' घुड़सवार ने उससे पूछा, ''तेरे पास

कितनी दौलत है ?'' उस आदमी ने कहा, ''भाई! बस जान ही जान है।'' घुड़सवार ने कहा, ''तू मेरे साथ बात न कर कहीं मैं भी तेरी तरह गरीब न बन जाऊं।'' हम किसी स्याने महापुरुष की बात सुनने के लिए भी तैयार नहीं होते।

जन्म अनेक झूलते बीते। जम झोटन के सहे फजीते।।

अब आप कहते हैं, ''चौरासी का झूला झूलते हुए अनेकों जन्म बीत गए। जब मौत आई चलो धर्मराज के पास। धर्मराज को लेखा दिया। धर्मराज कर्मों के मुताबिक फिर जन्म दे देता है।''

धर्मराय नित करे खुवारी। नर्कन में भोगे दुख भारी।।

आप कहते हैं, ''अब बुरे कर्म किए यमदूत आए कान से पकड़कर धर्मराज के पास ले गए। धर्मराज को सच्चा न्याय करने का हुक्म है, वह किसी की रियायत नहीं करता। धर्मराज ने नर्कों में डाल दिया जहाँ गया वहाँ सारी जिंदगी दुख–मुसीबतें झेलनी पड़ी।''

कर्म भार सिर ऊपर लादा। घेरे फिरे काल का प्यादा।।

आप कहते हैं, ''इसके सिर के ऊपर पुण्य और पापों का बोझ है। यमदूत डंडे मारते हैं आगे पहाड़ की चढ़ाई है चढ़ा नहीं जाता दुखी होकर रोता है।''

प्यादों के संग इज्जत खोती। सतनाम कुल की थी गोती।।

आप कहते हैं, ''आत्मा सतपुरुष की अंश है। इसने किसी राजकुमार के साथ शादी करके महारानी बनकर महलों में रहना था लेकिन यह भंगी के साथ दोस्ती करके दुखी हुई फिरती है, बेशर्म हुई फिरती है और उनकी जूतियां खाकर भूखी फिरती है।''

गोत लजाया जाति गंवाई। तो भी मन में लाज न आई।।

आप कहते हैं, ''इसने अपनी कुल छोड़ी अपनी जाति छोड़ी अपना घर छोड़ा। मन ने जो जातियां और समाज बनाए थे उनका फिक्र लगा रहा यह उनमें फँसी रही और अपने घर की याद भूल गई है।''

लाज करी तो मन के कुल की। सुध भूली सब अपने कुल की।।

इसकी कौम सतनाम और इसका घर सचखंड है लेकिन इसे उसकी लाज नहीं, उसके छूटने का डर नहीं। मन ने जो कौमें बनाई कि हम हिन्दु, मुसलमान, सिख या ईसाई हैं; हम अमेरिका या हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं। हाँलाकि हम सबको पता है कि न यहाँ अमेरिका वालों ने रहना है न हिन्दुस्तान वालों ने रहना है और न ही किसी की जाति–पाति साथ जाएगी। किसी की जाति–पाति मिट्टी में दफनाई जाएगी और किसी की जाति–पाति आग में जलाई जाएगी। कबीर साहब कहते हैं:

जाति पाति पूछे न कोए, हरि को भजे सो हरि का होए।

कुल इसका है सबसे ऊँचा। संत बिना कोइ जहाँ न पहुंचा।।

आप कहते हैं, ''आत्मा की कुल बहुत ऊंची है। इसकी कुल सतनाम है और इसका घर सचखंड है। यह सन्तों की मदद के बिना सचखंड नहीं पहुँच सकती।''

शेष महेश रहे सब नीचे। ब्रह्म और पारब्रह्म रहे बीचे।।

जहाँ इस आत्मा का घर है वहाँ ब्रह्मा, विष्णु और शिव कोई नहीं पहुँच सकता, सारे देवता नीचे ही रह जाते हैं।

सत्तपुरुष को लज्जा आई। संत औतार धरा जग माही।।

जब परमात्मा सतपुरुष ने देखा कि ये आत्माएं दुखी हो रही हैं काल इन्हें बहुत परेशान कर रहा है, उस समय आत्माएं फरियाद करती हैं तब सतपुरुष परमात्मा सन्तों का रूप धारण करके इस संसार

में सिर्फ आत्माओं के लिए ही आता है। सन्त हिन्दु, मुसलमान, सिख या ईसाई नहीं होते वे इंसान होते हैं और हमें इंसान बनने की ही शिक्षा देते हैं।

जिस समय हिन्दुस्तान में गुरु नानकदेव जी प्रकट हुए उस समय मुसलमान हुकूमत का बहुत जोर था। मुसलमान, हिन्दुओं को गाजर–मूली की तरह उड़ा रहे थे। जब उन्होंने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि आपकी क्या जाति है ? तब गुरु नानकदेव जी ने कहाः

हिन्दु कहो तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहीं।
पाँच तत्व का पुतला गैबी खेले माहीं।।

अगर मैं अपने आपको हिन्दु कहता हूँ तो आप मुझे मारेंगे लेकिन आप मुझे जैसा मुसलमान समझते हैं मैं वैसा मुसलमान भी नहीं हूँ। मैं पाँच तत्वों का आदमी हूँ मेरे अंदर गैबी ताकत अपना खेल खेल रही है। कबीर साहब कहते हैंः

न हम हिन्दु न मुसलमान, अल्लाह राम के पिंड प्राण।।

संत रूप धर जिव उपदेशें। बानी नाव बना जिव खेवें।।

आप कहते हैं, ''सतपुरुष आत्माओं की खातिर टट्टी–पेशाब और बीमारियों वाला चोला धारण करके इस संसार में आया। सतपुरुष ने आत्माओं को उनके घर का पता दिया, नाम का उपदेश दिया। परमात्मा ने सन्त–महात्माओं पर आत्माओं को शब्द–नाम के रास्ते पर डालने के लिए बड़ी भारी जिम्मेवारी सौंपी होती है लेकिन इसमें उनकी अपनी कोई भी दुनियावी गर्ज नहीं छिपी होती। वे बिना पैसों के हमारे हमदर्द हैं; सन्तों का जीव के साथ बेगरज प्यार है।'' कबीर साहब कहते हैंः

दिल का महरम कोई न मिलया, जो मिलया सो गरजी।

सुरत अजान न बूझे बानी। फिर फिर डूबे कहा न मानी।।

आत्मा अपने घर को भूल गई है सन्तों की हमदर्दी को नहीं समझती। जैसे गंदी नाली का कीड़ा गंदी नाली में रहकर ही खुश होता है उसी तरह आत्मा इस गंदे देश को ही पसंद किए बैठी है।

भौसागर में गोते खावे। मनमत ठान चौरासी धावे।।

यह मंडल बहुत भारी भवसागर है इसके न इस किनारे का पता है न उस किनारे का पता है। यह मन के पीछे लगकर बार–बार चौरासी लाख योनियों में जाती है।

संत बतावें सत की रीत। यह नहिं माने कुछ परतीत।।

सन्त–महात्मा संसार में आकर इसे अपने घर पहुँचने का रास्ता बताते हैं लेकिन इसके ऊपर मन–इन्द्रियों की जहर चढ़ी हुई है इसे प्रतीत ही नहीं आती। जिस तरह किसी को बुखार चढ़ा हो और उसे मिश्री खाने के लिए दें तो वह कहता है इसे दूर ले जाओ यह कड़वी है। मिश्री कड़वी नहीं लेकिन बुखार ने उसके मुँह का जायका कड़वा किया हुआ है। इसी तरह नाम कड़वा नहीं मीठा है लेकिन मन–इन्द्रियों की जहर ने हमारे मुँह का जायका, आत्मा का शीशा खराब किया हुआ है इसलिए नाम कड़वा लगता है और विषय–विकार मीठे लगते हैं।

बिन परतीत रीत नहिं पावे। जन्म जन्म चौरासी जावे।।

यह कुदरत का उसूल है कि हम जब तक सन्तों के साथ सच्चा और पवित्र प्यार नहीं करते उन पर श्रद्धा नहीं लाते तब तक परमात्मा अंदर से दरवाजा नहीं खोलता इसलिए आत्मा अपने घर नहीं जा सकती।

महाराज सावन सिंह जी ने सतगुरु प्यार पर बहुत जोर दिया है कि सचखंड वासी सतगुरु के साथ जितना ज्यादा प्यार किया जाए वह कम है। अगर आपसे भजन–अभ्यास नहीं होता तो आप कम से कम सन्तों के साथ प्यार ही कर लें।

चौरासी से संत बचावें। उनका बचन न मन ठहरावे।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''इसे चौरासी लाख योनियों से न हुकूमत, न ताकत, न बाल–बच्चे, न कौम ही छुड़ा सकती है। चौरासी लाख योनियों से इसे सन्त–सतगुरु ही बचा सकते हैं लेकिन इसे सन्तों के वचन पर प्रतीत नहीं। सन्तों के वचनों का इस पर इस तरह असर नहीं होता जिस तरह तेल के ऊपर पानी का असर नहीं होता।

मन के रंग फिरे बहुरंगी। ढंग न सीखे बड़ी कुढंगी।।

आप कहते हैं, ''इसके ऊपर मन और विषय–विकारों के रंग चढ़े हुए हैं। यह अपने ऊपर सतसंग का रंग चढ़ने नहीं देता, सतसंग में गया एक कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया।''

साध संत का ढंग नहिं सीखे। भोगे दुख रस चाखे फीके।।

आप कहते हैं, ''सन्त–महात्मा इसे भजन–अभ्यास का जो ढंग बताते हैं यह उसे सीखने के लिए तैयार नहीं लेकिन यह मन के ढंग विषय–विकारों के रस बड़ी आसानी से ग्रहण कर लेता है।''

रस फीके संसार के सबही। अंतर का रस अगम न लेही।।

आप कहते हैं, ''काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के सारे रस फीके हैं। हम संसार के रसों को छोड़कर ही अंदर नाम का रस प्राप्त कर सकते हैं।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

ऐह रस आवा, ओह रस जावा।

स्वाँति बदरिया अंतर बरसे। सुरत लगावे तो मन सरसे।।

आप कहते हैं, ''जिस तरह बाहर बादल बरसात करते हैं आप अंदर जाएं अंदर भी शब्द की बरसात हो रही है। अंदर प्यार के बादल अमृत बरसा रहे हैं, आत्मा अंदर जाए उसे पीकर बलवान हो।''

शर्द चन्द्रमा अंतर दरसे। सुन्न की धुन्न जाय जब परसे।।

आप कहते हैं, ''आत्मा को आगे सूरज, चन्द्रमा और तारे भी मिलते हैं। इन्हें पार करके हम पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं तब आत्मा के ऊपर से सारे पर्दे उतर जाते हैं, आत्मा जागृत हो जाती है कि मैं आत्मा हूँ।''

मोती चुने मानसरवर के। भोगे भोग मराल नगर के।।

आप कहते हैं, ''पारब्रह्म में पहुँची हुई आत्मा को हंस कहते हैं, हंसों की खुराक मोती होते है। जब यह देह में है तो इसकी काग वृति है, काग की खुराक विषय हैं; यहाँ इसकी खुराक इन्द्रियों के भोग हैं।''

जो संतन के बचन सम्हाले। जाय त्रिबेनी होय निहाले।।

आप कहते हैं, ''जो सन्तों के वचनों पर प्रतीत करते हैं, सन्तों के वचनों से प्यार करते हैं और उनके कहे मुताबिक अपना जीवन ढ़ालते हैं वे त्रिवेणी के अंदर पहुँचकर निहाल हो जाते हैं। वे उस अमृतसर में स्नान करके शान्त हो जाते हैं।''

होय निहाल सुन्दर लखे, सुने किंगरी नाद।
नाद सुनत होवत मगन, फिर खोजत पद आद।।
संत दया सतगुरु मया, पाया आद अनाद।
गति मति कहते ना बने, सुरत भई बिस्माद।।

वहाँ पहुँचकर आत्मा को खुशी हो जाती है यह अचरज बिस्माद हो जाती है फिर किसी को आकर क्या बताए? कबीर साहब कहते हैं:

गई पुतली लूण की, थाह सिंध की लैण।
अनाथ आप पाणी भई, उल्ट कहें को बैण।।

7 मई 1984

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु का बच्चा

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी भक्ति करने का तोहफा दिया है। कबीर साहब कहते हैं, ''जो शिष्य हमेशा गुरु को अपने सिर पर रखता है और गुरु का कहना मानता है उसे त्रिलोकी तक डरने की जरूरत नहीं।''

अगर शिष्य प्यार और श्रद्धा से गुरु का कहना मानता है तो उसे काल की शक्तियों की परवाह करने की जरूरत नहीं। जिस शिष्य के साथ गुरु होता है उसे काल की कोई भी शक्ति परेशान नहीं करती। जब हम शरीर की चेतना से ऊपर उठकर आँखों के पीछे आते हैं, गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं उसके बाद गुरु परछाई की तरह हमारे साथ रहता है; हमें एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ता।

***एक प्रेमी : गुरु का बच्चा** बनने के लिए क्या करना चाहिए?*

बाबा जी : यह बहुत ही दिलचस्प सवाल है। इस सवाल को सुनकर मेरा चेहरा ही नहीं मुस्कुरा रहा बल्कि मेरा दिल भी बहुत खुश है। इस सवाल के बारे में मैं आपको बहुत कुछ कह सकता हूँ लेकिन मैं आपको अपने अनुभव के मुताबिक कुछ शब्द ही कहूँगा कि **गुरु का बच्चा** बनने के लिए हमें अपनी चतुराई और अपने ऐब छोड़ने होंगे।

गुरु का बच्चा बनने के लिए एम.ए. पास को चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। **गुरु का बच्चा** बनने के लिए पवित्रता चाहिए। शिष्य का मन पवित्र होना चाहिए, उसकी कमाई पवित्र होनी चाहिए। मैंने पहले भी कई बार बताया है कि ऐसी आत्माएं पहले से ही तैयार होकर इस संसार में आती हैं। बचपन से ही उनके अंदर उस प्यार की इच्छा होती है। वह प्यार बाजार से खरीदा नहीं जा सकता, खेतों में उगाया नहीं जा सकता।

मैंने इस बारे में कई बार पहले भी आपको बताया है एक बार फिर आपको याद करवा रहा हूँ कि अपने अनुभव के बारे में बताना ही अच्छा होता है। मैंने सच्चे दिल से उसे अपना पिता और उसने मुझे अपना **बच्चा** मान लिया। मेरे प्यारे सतगुरु पच्चीस साल तक यही कहते रहे, ''परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं इंसान का बनना मुश्किल है क्योंकि परमात्मा इंसान की तलाश में है।''

परमपिता परमात्मा ने सभी आत्माओं का हिसाब अपने हाथ में रखा हुआ है। परमात्मा खुद ही फैसला करता है कि यह आत्मा इस जीवन में गुरु के पास आएगी या नहीं? इसे 'नामदान' मिलेगा या नहीं? नामदान मिलने के बाद इसे गुरु पर विश्वास आएगा या नहीं? परमात्मा खुद ही फैसला करता है कि यह आत्मा भजन-अभ्यास करेगी या नहीं? यह अपनी मंजिल तक पहुँचेगी या नहीं? क्या इसे अपने से दूर रखा जाएगा, भक्ति नहीं करने दी जाएगी? इसे इस रास्ते पर लाना है या नहीं? ऐसी चुनी हुई आत्माऐं जिनमें उत्सुकता होती है जब उनका समय आता है वे गुरु से मिलती हैं या गुरु खुद ही ऐसी आत्मा के सामने आकर खड़ा हो जाता है।

प्यारेयो! कई बार हमें बहुत शर्म महसूस होती है क्योंकि शादी-शुदा होते हुए भी हम इस दुनियां में बह जाते हैं। हम व्याभिचार करते हैं और कहते हैं कि मन के कहने पर हमनें यह भूल की।

यह गरीब आत्मा जो आपके सामने बैठी है यह जिस जगह पैदा हुई वहाँ सभी दुनियावी सुविधाएं थी। यह गरीब आत्मा जब जवान हुई तो इसके पास भी मन था। जहाँ तक शादी का सवाल है मेरे माता-पिता ने शादी के लिए मुझे बहुत जोर दिया लेकिन मैंने जब उन्हें शादी के लिए मना किया तो उन्होंने कहा अगर तुम शादी नहीं करोगे तो हम कुएं में छलांग लगाकर अपनी जान दे देंगे। मैं उनका दिल नहीं तोड़ना चाहता था मैं उनके सामने रोया और मैंने उन्हें समझाया कि मैं शादी नहीं करना चाहता।

अपने प्यारे गुरु के मिलने से पहले मुझे ऐसा कोई आदमी नहीं मिला था जिसने मेरे प्यारे गुरु की बड़ाई या निन्दा की हो। मैं अपने गुरु के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। मैं जब अपने गुरु से पहली बार मिला तो मैंने आपसे कहा, ''मैं अपनी माता के पेट से पैदा होने के बाद अभी तक कुँवारे जैसा पवित्र हूँ।''

प्यारेयो! मैं परमात्मा की तलाश में बहुत दिनों तक जमीन पर सोया, कई दिनों तक भूखा-प्यासा रहा। जब आपके दिल के अंदर बिछोड़े का दर्द होता है तो आप बुराई के बारे में कैसे सोच सकते हैं? आपकी यही इच्छा होती है कि आप किस दिन अपने प्यारे से मिलेंगे?

सन् 1947 में जिस समय पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में लड़ाई चल रही थी उस समय हमारी आर्मी लड़ाई में शामिल थी। उस लड़ाई के दौरान मुझे अपने देश की सेवा करने का मौका मिला। हम जिन पहाड़ो में लड़ाई लड़ रहे थे वहाँ बहुत बर्फ पड़ती थी। लड़ाई में कामयाब होने पर हमारे अच्छे काम के बदले में सरकार ने ईनाम के बदले हमें छह महीने की छुट्टियाँ दी, हमें शिमला की पहाड़ियों में जाने का मौका दिया। यह सोचकर कि समतल इलाके में रहने की बजाय कुछ समय ठंडी जगह पर बिताना चाहिए क्योंकि हम लड़ाई के दौरान बहुत बर्फीले पहाड़ो पर रहे थे।

मैंने दूसरे लोगों की तरह पहाड़ो में रहकर छुट्टियां बिताने की बजाय समतल इलाके में रहना पसंद किया। जून के गर्म महीने में धूनियां तपाई। यह धूनियां मैंने पैसे इकट्ठे करने के लिए नहीं बल्कि इसलिए तपाई कि शायद शरीर को आग में जलाने से मेरा प्यारा मुझे मिल जाएगा! मैं जानता था कि शरीर तपाने से या भूखा-प्यासा रहने से किसी को परमात्मा नहीं मिलता लेकिन मैंने ये सब शारीरिक क्रियाएं इसलिए की कि कहीं मेरा मन मुझे मेरे रास्ते से भटका न दे। कहीं मैं ऐसा न बन जाऊं कि मैं दुनियावी सुखों में खो जाऊं?

जब मेरा अपने प्यारे से मिलने का समय आया उस समय मैं अपने घर पर था। उसने खुद ही संदेश भेजा कि मैं आ रहा हूँ। वह खुद ही मेरे पास आया क्योंकि मैं तो उसका नाम भी नहीं जानता था। उसने मेरे बचपन की प्यास बुझाई मेरी इच्छा पूरी की। बचपन से ही मेरी इच्छा थी कि मेरा दूल्हा आए और मुझसे शादी करे।

मेरी माता ने मुझे बताया था कि आदमी की शादी आदमी के साथ नहीं औरत के साथ होती है। मेरी इच्छा थी कि मैं परम पिता परमात्मा के साथ शादी करूंगा लेकिन वह कौन है? मैं यह नहीं जानता था। यह सच है कि वह एक दूल्हे की तरह आया, वह मेरे लिए कपड़े लाया, उसने मुझे अंगूठी पहनाई और मेरे साथ शादी की। इस तरह उसने मेरी इच्छा पूरी की, मेरी जन्मों-जन्मों की प्यास बुझाई।

हिन्दुस्तान में यह रिवाज़ है कि जब किसी औरत की शादी होती है वह अपने पति के घर जाती है यह पति पर निर्भर है कि वह उसे किस नाम से बुलाए। इसमें औरत की अपनी कोई मर्जी नहीं होती वह सदा अपने पति की इच्छानुसार रहती है।

प्यारेयो जरा सोचें! एक आदमी जिसके लिए आपने पूरी ज़िंदगी इंतजार किया हो जिसे आप जानते भी न हों वह जब आपके पास आए और पहली ही मुलाकात में आपको बहुत मुश्किल इम्तिहान में डाल दे। मेरा प्यारा गुरु जब पहली बार मेरे पास आया तो वहाँ मेरे पास बहुत बड़ी जगह थी जिस पर बहुत बड़ा मकान बना हुआ था। उसने सारा मकान देखा और मुझसे कहा, ''तू यह जगह छोड़ दे।''

जिस तरह पप्पू यहाँ साँपला में बहुत बड़े-बड़े मकान बनवा रहा है, जिसमें से कुछ बन गए हैं और कुछ बन रहे हैं। इसी तरह उस जगह पर कुछ मकान बन गए थे और कुछ बन रहे थे। अगर मैं पप्पू से कहूँ कि इस जगह को छोड़ दे तो इसे दिल का दौरा पड़ जाएगा जबकि मैं पप्पू के साथ रहता हूँ लेकिन मैं तो अपने गुरु को पहले से जानता भी नहीं था।

जब मेरे गुरु ने मुझे उस जगह को और वहाँ रखा हुआ सब सामान छोड़ने के लिए कहा उस समय मेरे सिर पर साफा बंधा हुआ था। जब मैंने पगड़ी पहननी चाही तो मेरे गुरु ने पगड़ी उठाने के लिए भी मना किया। मैंने उसी समय वह जगह छोड़ दी और उसी दिन शाम को 16 पी.एस. चला गया जहाँ पर मैं अब रह रहा हूँ।

मेरे एक नज़दीकी प्रेमी ने एक बार मुझे सलाह दी कि हमें उस जगह से जाकर बर्तन ले आने चाहिए। मैंने उस प्रेमी से नाराज़ होकर कहा, ''क्या तुम्हें यहाँ खाना बर्तनों में नहीं मिलता? मेरे गुरु ने मुझसे जो कहा है मैंने वही करना है।''

मेरे एक रिश्तेदार ने जायदाद छोड़ने पर मुझसे विरोध करते हुए कहा, ''तुम अपनी जायदाद किस तरह छोड़ सकते हो?'' मैंने चुटकी बजाते हुए कहा, ''बिल्कुल इसी तरह क्योंकि मुझे जायदाद के साथ नहीं अपने गुरु के साथ लगाव है।''

आमतौर पर अगर गुरु ने अपने लिए झोपड़ी भी बनाई होती है तो गुरु के रहते ही हम उस जगह की तरफ देखते हैं और इंतजार करते हैं कि गुरु के जाने के बाद हम उस जगह के मालिक बन जाएं। गुरु के जाने के बाद हम लोग आपस में लड़ते हैं उस संपत्ति पर कब्जा करने के लिए कोर्ट कचहरी तक चले जाते हैं।

प्यारेयो! जब आपने गुरु के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया है तो ही आप **गुरु के बच्चे** बन सकते हैं। आप ऐसा तभी कर सकते हैं जब आप चतुराई छोड़ दें और एक बच्चे की तरह मासूम बन जाएं अगर बच्चे के हाथ से खिलौना छीन लें तो वह कुछ नहीं कर सकता। जिस गुरु ने आपको सब कुछ दिया है अगर वह वापिस ले ले यह आप तभी बर्दाश्त कर सकते हैं जब आपमें चतुराई न हो, आप मासूम हों। **गुरु का बच्चा** बनना बहुत मुश्किल है।

मेरे प्यारे गुरु ने कभी मुझे अपने सामने नहीं बैठने दिया था। आप सदा ही मुझे अपने साथ बिठाया करते थे। मुझे कई बार आपके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है; मुझे कई बार आपके साथ खाना खाने का मौका मिला है। मुझे कई बार आपकी गोद में बैठने का मौका मिला है जिस तरह एक बच्चा अपने पिता की गोद में बैठता है और मुझे कई बार आपकी दाढ़ी से खेलने का मौका मिला है। उस समय मैं आधा पागल हुआ करता था मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ?

प्यारेयो! बच्चा दोस्त और दुश्मन में फर्क नहीं समझता उसके लिए रस्सी और साँप एक बराबर होते हैं। वह पूरी तरह से अपने माता-पिता की इच्छा के आधीन होता है और माता-पिता पर विश्वास करता है। हमारे गुरु के पास हजारों दुनियावी माता-पिता से भी ज्यादा प्यार है अगर हम खुद को पूरी तरह से गुरु की इच्छा के आधीन कर दें तो हम **गुरु के बच्चे** बन सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब कोई **गुरु का बच्चा** बन जाता है तो गुरु को भी कुछ देना पड़ता है। ऐसे बच्चे के लिए गुरु सचखंड से तोहफा लेकर आता है जिसे ब्रह्म और पारब्रह्म भी नहीं ले सकते। यहाँ तक की देश का मालिक जोत-निरंजन भी गुरु के दिए हुए तोहफे को नहीं छीन सकता।''

प्यारेयो! **गुरु का बच्चा** बनना बहुत ऊँची चीज़ है। मैं तो यह कहूँगा कि भाग्यशाली जीव ही ऐसी आशा कर सकता है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

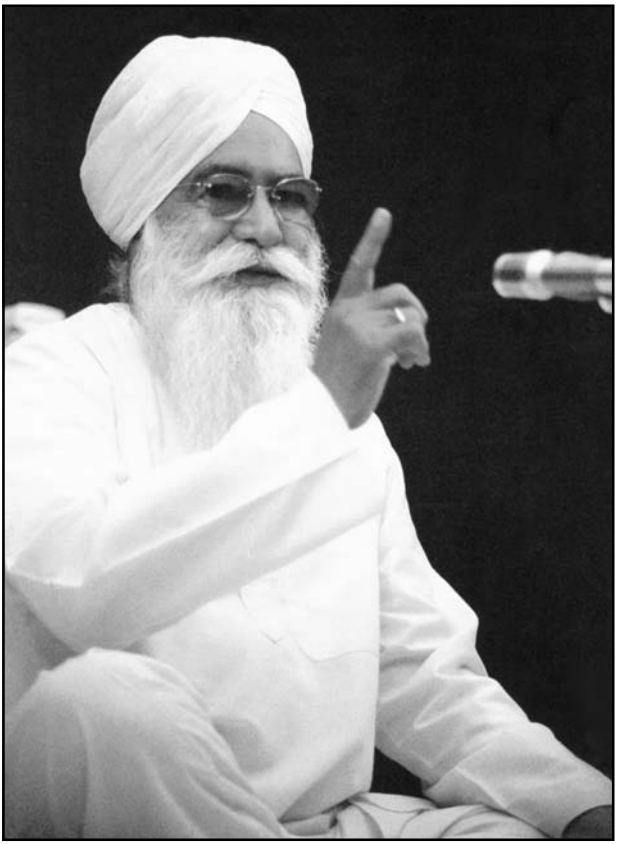

मैं अभ्यास में बिठाने से पहले थोड़ी सी लाईनें बोला करता हूँ कि सतसंगी जब भी भजन में बैठें उन्हें ये थोड़ी सी लाईनें याद रखनी चाहिए। अभ्यास में बैठने से पहले मन को जरूर जवाब दें कि हम किसी खास काम के लिए बैठ रहे हैं तूं दिन भर जो काम करता है हमने उसमें दखल नहीं दिया अब तू भी एक घंटे के लिए हमारे काम में दखल न दे।

मैं बताया करता हूँ कि संघर्ष करना ही अभ्यास है। जो मन आज आपको यह सलाह देता है कि अभ्यास कल कर लेंगे, कल भी आपका मन आपके पास ही होगा। वह कल-कल करके आपकी उम्र व्यतीत कर देगा लेकिन आपको अभ्यास में बैठने नहीं देगा। सतसंगी को मजबूत इरादे के साथ मन को खाली करके अभ्यास में बैठना चाहिए।

मन का यह काम है कि जब हम अभ्यास में बैठते हैं तो यह अपना दफ्तर खोल लेता है। यह हमें मीठी-मीठी प्यारी-प्यारी बातें बतानी शुरू करता है और हम सुनना शुरू कर देते हैं। मन ये बातें खत्म नहीं होने देता, अभ्यास का टाईम पूरा हो जाता है तब तक हम बाहर ही फिर रहे होते हैं।

मैंने एक बार काफी प्रेमियों को अभ्यास में बिठाया। जब मैंने एक प्रेमी से पूछा, ''क्यों भई! कैसा अभ्यास हुआ?'' उस प्रेमी का गांव यहाँ से चालीस पैंतालीस मील दूर पंजाब में है। उसे वह गाँव छोड़े हुए भी चालीस साल हो गए। उस प्रेमी ने अपने अभ्यास का तजुर्बा बताया कि मैं उस गाँव में बैलगाड़ी पर लकड़ियाँ लेकर जा रहा था, मेरी बैलगाड़ी पेड़ के अंदर फँस गई। मैं अपने भाई को आवाज लगा रहा था कि तू आ हम बैलगाड़ी निकालें। सोचकर देखें! हम बैठे अभ्यास में हों और उस जगह को छोड़े हुए भी चालीस साल हो गए हों फिर भी हम काँटों में उलझे हों तो क्या हम अभ्यास कर रहे हैं?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि मन सैंकड़ो साल की भूली हुई बात अभ्यास के वक्त याद करवा देता है।

आप एक जाट की मिसाल दिया करते थे कि जाट की कुल्हाड़ी खोऐ हुए कई साल हो गए थे। वह जब अभ्यास में बैठा तब मन ने अंदर से ईशारा किया कि कुल्हाड़ी फलाने के घर है तू जाकर उस कुल्हाड़ी को ले आ। अभ्यास में विघ्न डालना मन का काम है। मन अपने मालिक का काम करता है। हमें हमारे गुरुओं ने भजन-सिमरन करने का काम दिया है। हम अपने मालिक गुरु का काम ईमानदारी से करें।

मन हमें वह बातें बताता है जिससे हम बार-बार इस संसार में फँसते हैं। जब हम बार-बार सिमरन करते हैं अपनी आत्मा को छह चक्रों में से निकालकर आंखों के पीछे लाते हैं तब सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करके गुरु स्वरूप तक पहुँच जाते हैं। हमारे अंदर प्यार की चिंगारी जल उठती है फिर हम उस प्यार को छोड़ नहीं सकते। जिस तरह आज अंदर जाना मुश्किल है उसी तरह फिर बाहर ठहरना भी मुश्किल हो जाता है। अभ्यासी जब तक गुरु स्वरूप तक न पहुँच जाए उसे कोशिश करनी चाहिए, दम नहीं लेना चाहिए।

भक्ति क्यों करनी है? दुनिया के अंदर ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो हमारे साथ जाए, हमारी मदद करे। सोना, चाँदी, धन-पदार्थ सब बदलने वाले हैं लेकिन नाम नहीं बदलता नाम के अंदर परिवर्तन नहीं आता। नाम पहले भी था आज भी है और आगे भी रहेगा। दुनिया से अगर कोई अमोलक धन इकट्ठा करने वाला है तो वह शब्द-नाम की कमाई है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बिन नामे को संग न साथी, मुक्ते नाम ध्यावणया।

नाम के बिना आपका कोई संगी-साथी नहीं। न शिष्य की देह सदा रहेगी न गुरु की देह सदा रहेगी इसलिए सन्त हमें अपने साथ नहीं नाम के साथ जोड़ते हैं। गुरु का स्वरूप शब्द है शिष्य का स्वरूप सुरत है। सन्त सुरत और शब्द का मिलाप करते हैं। जब सिद्धों ने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि आपका गुरु कौन है? तब आपने कहाः

शब्द गुरु सुरत धुन चेला।

शब्द गुरु है हमारी आत्मा चेला है। सभी सन्त किसी को भी अपने साथ नहीं जोड़ते क्योंकि शरीर नाशवान है इसलिए सन्त सेवक को शब्द के साथ जोड़ते हैं। सन्तों का सेवक से कमाई करवाने का यही मकसद होता है कि ये हमारे जीवन काल में ही मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाएं। शब्द को प्राप्त कर लें बाद में पार्टियों में न बँट जाएं, ये काल की नगरी में रोते-चिल्लाते न फिरें। लोगों को यह कहते न फिरें कि हमारा गुरु मर गया है। तब लोग इनके मुँह पर थूकें कि तुम्हारा गुरु मर गया, यही तुम्हारा गुरु था!

मैंने सारे मुल्कों में यही होका दिया कि जो लोग यह कहते हैं कि गुरु मर गया है उन्हें कोर्ट में खड़ा करके पूछें कि आपने मरने वाला गुरु क्यों किया? गुरु मरता नहीं। जिनका गुरु जीने-मरने में लगा हुआ है वह दूसरों को कैसे तारेगा, वह किस तरह आपको सचखंड लेकर जाएगा?

गुरु आपको जिस ताकत के साथ जोड़ता है वह ताकत कभी नाश नहीं होती, फनाह नहीं होती। फर्क सिर्फ इतना है

कि हमारे अंदर वह ताकत सोई हुई है और गुरु के अंदर वह ताकत जाग रही है। धरती के अंदर सब जगह पानी है कहीं दस फुट, कहीं साठ फुट, कहीं सौ फुट लेकिन फायदा उन लोगों को पहुँचता है जिन लोगों ने नलका या ट्यूबवेल लगाकर कुँआ खोदकर पानी निकाल लिया, अपनी प्यास बुझा ली।

परमात्मा गुरु में भी है सेवक में भी है लेकिन सेवक ने अभी तक उस ताकत परमात्मा को जगाया नहीं, उससे अंदर जाकर मिला नहीं। सन्त परमात्मा को जगाकर परमात्मा के साथ मिल गए हैं उन्हें उस धन का पता है कि वह धन कितना अमोलक है कितना ऊँचा है। हमें पाँच डाकु काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार परेशान करते हैं मालिक से दूर रखते हैं। नाम वाले के आगे ये पाँचों डाकु बिल्ली बनकर खड़े हो जाते हैं, विनती करते हैं।

इसलिए हमने मन को जवाब देकर अभ्यास में बैठना है। परमात्मा की भक्ति बहुत अमोलक, सच्चा धन है। परमात्मा की भक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है, सच्ची इज्जत की दाता है। हम जब तक सन्त-सतगुरु के दरबार में जाकर उनकी संगत-सोहबत से फायदा नहीं उठाते तब तक इस भक्ति के धन को प्राप्त नहीं कर सकते।

सन्त कहते हैं कि परमात्मा अच्छा है और उसके प्यारे भक्त भी अच्छे हैं। भक्तों ने उसके साथ प्यार करके उसे अपने ऊपर मेहरबान कर लिया है। अच्छा बेटा अपने पिता से जो चाहे करवा सकता है। हम आमतौर पर कहते हैं कि परमात्मा

भक्तों के बस में है। भक्त हमेशा परमात्मा से वही काम करवाते हैं जो हर एक के फायदे का हो। गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी बानी में लिखते हैंः

सुखी वसे मोरो परिवारा सेवक सिक्ख सभे करतारा।

हे भगवान! मैं तेरे आगे विनती करता हूँ, ''मेरा परिवार सिक्ख संगत सुखी रहे। आप मुझ पर भी दया करें कि मैं आपका पल्ला पकड़े रखूं।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''हमने अभ्यास में बैठकर सतसंग में बैठकर अपनी कमियां देखनी हैं। हम अभ्यास में कामयाब क्यों नहीं होते, क्या हम एक घंटे के लिए सचमुच अभ्यास में बैठे थे? हमने हमेशा अपनी कमी देखनी है।''

एक बार मेरे गुरुदेव ने मुझे करणपुर में सतसंग करने के लिए कहा। मैं कुछ देर नहीं बोला फिर जब आपने दूसरी बार कहा, उस समय मेरा गला भरा हुआ था कि मैं आपके सामने क्या बोलूं? यह तो अपनी-अपनी मौहब्बत है अपनी-अपनी सोच है। मैं कहा करता हूँ कि हम जब तक अपने गुरु के गुणों और अपने अवगुणों की तरफ नहीं देखते तब तक हम कामयाब नहीं हो सकते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो आदमी गलती करके नहीं मानता वह एक और गलती कर रहा होता है।'' मैंने जब अपने मुँह से आवाज निकाली तो वह यही थी, ''संसार में तेरे जैसा कोई सन्त या गुरु नहीं, मेरे जैसा कोई पापी नहीं। मैं अपने कौन-कौन से पाप बताऊं? मैं गुनाहगार

हूँ पता नहीं तूने मुझे कैसे अपने गले से लगाया हुआ है।'' महाराज जी ने कहा, ''मैं तुझे सतसंग करने के लिए कह रहा हूँ।''

कहने का भाव वही अपने अवगुण और गुरु के गुण देखता है जो अंदर जाता है। अंदर जाने वाले के अंदर कभी भी अभाव नहीं आता उसे पता है कि यह सच्चा-सुच्चा है, प्योर है लेकिन हमारे ऊपर मन-इन्द्रियों की जहर चढ़ी हुई है।

हमने जब अभ्यास या सतसंग के अंदर बैठना है तो अपनी गलतियों की तरफ देखना है। आप गुरु के गुणों को लें। ऐसा करने से आप कामयाब हो जाएंगे। बहुत सारे बे-नामलेवा बच्चे भी बैठे हैं इसलिए मैं सिमरन नहीं बोल रहा। हर एक ने बताई हुई युक्ति के मुताबिक सिमरन करना है, अभ्यास करना है। जब तक आवाज न दी जाए कोई भी न उठे अगर किसी बीबी का बच्चा रोता है या वह इतनी देर नहीं बैठ सकता तो उसे अभी पीछे चले जाना चाहिए ताकि वह भजन में बैठे हुए प्रेमियों को परेशान न करे। आँखे बंद करके अभ्यास में बैठें और अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करें।

हमेशा बैठते हुए मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास के वक्त मन को बाहर न भटकने दें, तीसरे तिल पर एकाग्र करें। भटका हुआ मन कहर मचा देता है। मन तीसरे तिल पर एकाग्र करें क्योंकि हमारे सफर की शुरूआत तीसरा तिल ही है। तीसरा तिल हमारे घर का दरवाजा है सफर की शुरूआत है। हाँ भई बैठें।

25 अगस्त 1985

***

धन्य अजायब

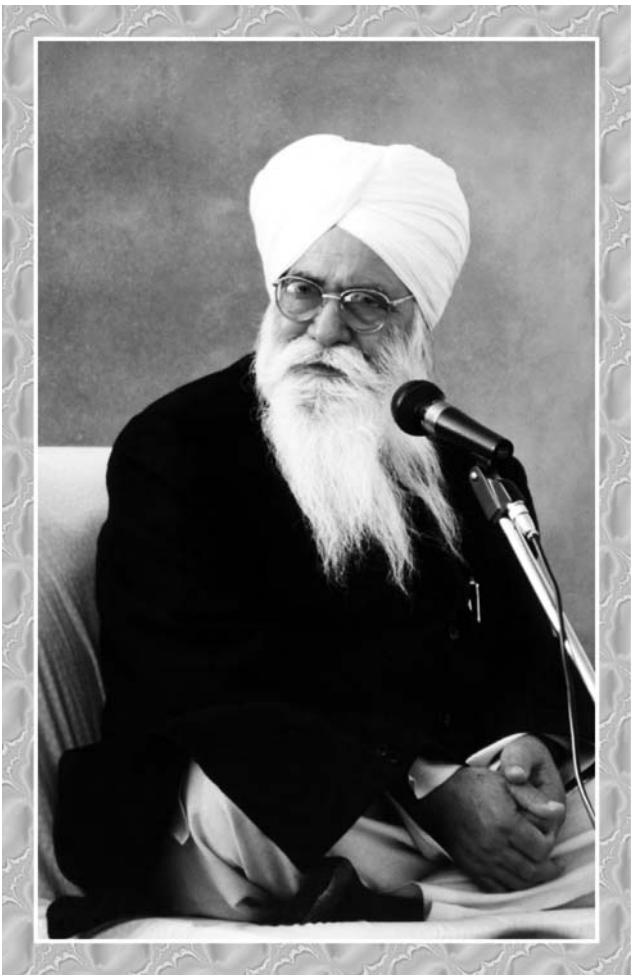

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

02 से 06 फरवरी 2018

02 से 04 मार्च 2018

31 मार्च से 02 अप्रैल 2018